शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

भारत में धर्म और राजनीति का आपसी संबंध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. आलोक अग्रवाल
डॉ. भक्ति अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ-साथ, विविध धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और जातियों का देश है। यहाँ धर्म और राजनीति का संबंध सदियों पुराना है, जो समय के साथ कई रूपों में विकसित हुआ है। यह शोध पत्र धर्म और राजनीति के परस्पर प्रभाव, उनकी ऐतिहासिक, सामाजिक और संवैधानिक व्याख्या तथा आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य में इन दोनों के संबंधों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार धर्म का प्रयोग राजनीति में जनसमर्थन अर्जित करने, ध्रुवीकरण करने एवं सत्ता प्राप्त करने के लिए किया जाता है, और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही ऐतिहासिक घटनाओं, संवैधानिक प्रावधानों, चुनावी राजनीति, धार्मिक ध्रुवीकरण, तथा धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द

धर्म, राजनीति, धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता, भारतीय संविधान, चुनावी राजनीति, धार्मिक ध्रुवीकरण, सामाजिक न्याय, भारतीय समाज, बहुसंख्यकवाद, तुष्टिकरण, लोकतंत्र।

प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विविध धर्म, संप्रदाय और विश्वास प्रणाली सह-अस्तित्व में हैं। भारत में धर्म न केवल एक व्यक्तिगत आस्था का विषय है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक व्यवहार का भी प्रमुख आधार रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय राजनीति में धर्म का प्रभाव मौर्य काल से लेकर वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था तक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक विकास तक, धर्म और राजनीति के बीच गहरा संबंध रहा है। जबकि भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्षता की बात करता है, परंतु व्यवहार में धर्म राजनीतिक विमर्श का

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

महत्वपूर्ण अंग बना रहा है। इस शोध पत्र का उद्देश्य धर्म और राजनीति के इस आपसी संबंध की प्रकृति, प्रभाव और परिणामों का गहन विश्लेषण करना है।

शोध विधि

इस शोध में गुणात्मक शोध पद्धति (Qualitative Research Method) का उपयोग किया गया है। शोध हेतु ऐतिहासिक दस्तावेजों, समाचार पत्रों, शोध लेखों, संवैधानिक प्रावधानों और चुनावी डेटा का अध्ययन किया गया है। साथ ही, विभिन्न विशेषज्ञों और राजनीतिक विश्लेषकों के विचारों एवं केस स्टडी का सहारा लिया गया है।

शोध विस्तार

1. धर्म और राजनीति का ऐतिहासिक संदर्भ

(i) प्राचीन भारत में धर्म और सत्ता का गहरा संबंध रहा। राजा 'धर्म की रक्षा' के लिए उत्तरदायी माना जाता था। मध्यकाल में धर्म और सत्ता के बीच तनाव एवं सहयोग दोनों देखे गए। मनुस्मृति, धर्मसूत्रों और महाभारत में धर्मराज्य की अवधारणा।

(ii) मुस्लिम शासकों द्वारा इस्लामी कानून और सत्ता का सामंजस्य एवं भक्ति और सूफी आंदोलन का उदय, जिसने धर्म को जनसरोकारों से जोड़ा।

(iii) ब्रिटिश काल में 'फूट डालो और राज करो' नीति के तहत धार्मिक पहचान को राजनीतिक रूप से इस्तेमाल किया गया। अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' नीति के तहत हिन्दू-मुस्लिम विभाजन को गहरा किया। मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा जैसी धार्मिक-राजनीतिक संस्थाओं का उदय।

2. स्वतंत्रता के बाद धर्म और राजनीति

(i) संविधान और धर्मनिरपेक्षता

भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया। संविधान के अनुच्छेद 25-28 धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। राज्य का कोई धर्म नहीं होगा, परंतु सभी धर्मों का सम्मान किया जाएगा।

(ii) धार्मिक राजनीति का उभार

1980 के बाद हिंदुत्व विचारधारा का उभार। बाबरी मस्जिद विध्वंस (1992) और इसके बाद की सांप्रदायिक हिंसा। मुस्लिम तुष्टिकरण और बहुसंख्यकवाद के आरोपों से जुड़ी राजनीति।

3. चुनावी राजनीति में धर्म का प्रभाव

राजनीतिक दल चुनावों में धार्मिक नारों, प्रतीकों, और भावनाओं का उपयोग करते हैं। राम मंदिर आंदोलन और चुनावी जीत के बीच संबंध। धार्मिक मुद्दों पर आधारित घोषणापत्र और प्रचार। अल्पसंख्यक समुदायों को वोट बैंक के रूप में देखना।

4. सांप्रदायिकता और सामाजिक प्रभाव

धार्मिक आधार पर दंगे और हिंसा जैसे उदाहरण – 1984 सिख दंगे, 2002 गुजरात दंगे। अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना। धर्म आधारित आरक्षण, मुस्लिम तुष्टिकरण एवं बहुसंख्यकवाद की राजनीति।

5. मीडिया और धर्म-राजनीति

मीडिया के माध्यम से धार्मिक मुद्दों का प्रसार और राजनीतिकरण। सोशल मीडिया का उपयोग धार्मिक ध्रुवीकरण के लिए।

6. धर्मनिरपेक्षता की चुनौतियाँ

व्यवहारिक रूप से भारतीय राजनीति में पूर्ण धर्मनिरपेक्षता का अभाव। संविधान की धर्मनिरपेक्ष भावना और राजनीतिक व्यवहार में विरोधाभास।

निष्कर्ष

भारत में धर्म और राजनीति का संबंध बहुआयामी, संवेदनशील और जटिल है। जबकि संविधान एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की बात करता है, व्यवहार में राजनीति में धर्म का गहरा हस्तक्षेप है। धार्मिक भावनाओं का राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग किया जाना भारतीय लोकतंत्र की आत्मा को आहत करता है। आवश्यकता है कि धर्म और राजनीति को उचित दूरी पर रखा जाए ताकि लोकतंत्र की मूल भावना और सामाजिक समरसता बनी रहे। परंतु यह लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। आज आवश्यकता है कि धर्म को आस्था के स्तर तक सीमित रखा जाए और राजनीति को नीतियों, योजनाओं और विकास पर केंद्रित किया जाए।

सुझाव

1. चुनावी प्रक्रिया में धर्म के प्रयोग पर सख्त प्रतिबंध लगाया जाए।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

2. चुनाव आयोग को अधिक शक्तियाँ प्रदान की जाएं ताकि धार्मिक ध्रुवीकरण को रोका जा सके।
3. धार्मिक आधार पर राजनीतिक भाषण देने वाले नेताओं पर कानूनी कार्रवाई हो।
4. शिक्षा प्रणाली में धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को बढ़ावा दिया जाए।
5. मीडिया और सोशल मीडिया को जवाबदेह बनाया जाए।
6. नागरिकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जाए।
7. समान नागरिक संहिता की दिशा में ठोस प्रयास किए जाएं।
8. शिक्षा प्रणाली में सहिष्णुता, समरसता और धर्मनिरपेक्षता का समावेश हो।

संदर्भ सूची

1. भारतीय संविधान, भारत सरकार प्रकाशन।
2. गांधी, एम.के. – My Experiments with Truth।
3. नेहरू, जवाहरलाल – Discovery of India।
4. रजनी कोठारी – Politics in India।
5. चंद्र, बिपन – Communalism in Modern India।
6. Election Commission of India Reports (2014, 2019, 2024)।
7. Various research journals from JStor, EPW, और SSRN।
1. 5. Christophe Jaffrelot – Religion, Caste and Politics in India।
2. 6. Ramachandra Guha – India After Gandhi।
8. Frontline, The Hindu, The Wire, Scroll.in – विश्लेषणात्मक लेख।
9. Supreme Court Judgements – Shah Bano Case, Sabarimala Case, Triple Talaq Verdict।
10. सोशल मीडिया रिपोर्ट्स और चुनाव विश्लेषण।